संपादकीय

समय की शिला पर...

डॉ. गौरी त्रिपाठी

डॉ. गौरी त्रिपाठी स्वनिम की संपादक हैं तथा इनका प्रिय क्षेत्र आलोचना और समीक्षा हैं। वर्तमान में हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर में एसोसिएट प्रोफ़ेसर के पद पर कार्यरत हैं।

सर्जनात्मक वैविध्य का लघु फलक!

कतिपय अकादमिक व दस्तावेजी व्यस्तताओं की वजह से थोड़े बिलंब से "स्वनिम' का यह दूसरा अंक अब आपके लिए प्रस्तुत है। दूसरे अंक के तैयार होने में निर्धारित अवधि में विलंब हो गया। हमारी पूरी कोशिश होगी कि आगे से यह पत्रिका समय से निकलती रहे। बरहाल इस बात का संतोष है कि पत्रिका का यह अंक पाठकों के लिए संग्रहणीय होगा। पत्रिका के सारे स्थायी स्तम्भ पूर्ववत रखे गए हैं। कुछ नए स्तम्भ भी जोड़े गए हैं। विरासत में प्रेमचंद की अपेक्षाकृत कम चर्चित लेकिन अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कहानी "मुक्तिमार्ग" को हमने शामिल किया है। इस कहानी को शामिल करने के पीछे हमार उद्देश्य यह है कि एक तो यह कहानी हमारे हिन्दी विभाग के पाठ्यक्रम में भी शामिल है दूसरा इस कहानी पर अपेक्षाकृत चर्चा कम हिन्दी साहित्य में हुई है। हमारे विभाग के सेवानिवृत्त प्रोफेसर और वरिष्ठ कथाकार डॉ. देवेन्द्र की पाठकीय टिप्पणी इस कहानी पर अलग से प्रकाशित की जा रही है, जो न सिर्फ हमारे छात्रों के लिए अपितु हम सबके लिए एक दृष्टि प्रदान करेगी।

औपनिवेशिक दौर में मैकाले ने हम भारतीयों के लिए जो शिक्षा व्यवस्था दी थी, आजादी के लंबे समय तक हम उससे मुक्त न हो सके। एक लंबे समय तक हम नयी शिक्षा नीति के नाम पर हम कई बार मैकाले के उसी ढांचे के नये-नये संस्करण प्रस्तुत करते रहे। "राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020" इस दिशा में एक निर्णायक प्रस्थान बिन्दु के तौर पर दिखाई देता है। क्या था मैकाले की शिक्षा व्यवस्था का सच ? इसने कैसे हमें अपनी जड़ों से काट दिया था ? इसे बहुत बारीकी से प्रियंवद का लेख "एक खत मैकाले के नाम" स्पष्ट करता है। प्रियंवद हिन्दी के एक ऐसे लेखक हैं जिन्होंने कहानियों, उपन्यासों के अलावा इतिहास की भी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं। उनका यह लेख पत्रिका के बौद्धिक स्तर को एक निश्चित ऊंचाई प्रदान कर सकेगा।

छायावादोत्तर हिन्दी कविता जिन कुछेक कवियों से अपनी पहचान मुकम्मल करती है उनमें त्रिलोचन का नाम अग्रणी है। हिन्दी के सुधी पाठक जानते हैं कि भाषा को लेकर त्रिलोचन कितने सावधान रहा करते थे। उसकी एक बानगी या यूं कहें कि स्वयं उन्हीं के शब्दों में उनका साक्षात्कार उनकी मृत्यु के बहुत दिन बाद "स्वनिम" में पहली बार प्रकाशित किया जा रहा है। त्रिलोचन का यह साक्षात्कार हिंदी के युवा आलोचक आशुतोष ने लिया था। यह दु:खद संयोग ही है कि आज न ही त्रिलोचन हमारे बीच हैं, न ही आशुतोष। उन दोनों के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि स्वरूप हम इसे प्रकाशित करके गौरवान्वित हो रहे हैं। अम्बिकापुर के युवा कथाकार श्री राजेश मिश्र ने स्वनिम के लिए यह महत्त्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध करायी है जिसके लिए हम उनके सदा आभारी रहेंगे।

इफको सम्मान प्राप्त हमारे वरिष्ठ कथाकार श्री महेश कटारे की रचना "फिर तेरा फसाना याद आया" इस अंक की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। "जिजीवीयन" के लिए हमने अपने विश्वविद्यालय के जिन दो रचनाकारों- सुष्मिता पारीक और गायत्री पटेल की कहानियों का चयन किया है वे आने वाले समय की पदचाप हैं। हमारे विभागीय सहकर्मी डॉ. रमेश गोहे के कवि रूप से तो सभी परिचित हैं यहां उनके कथाकार रूप से भी सब परिचित होंगे। एक दर्जन से ज्यादा ताजातरीन कहानियों के साथ "स्वनिम" के इस दूसरे अंक के साथ हम पुनः उपस्थित हो रहे हैं। हमें विश्वास है कि यह पत्रिका देश भर के हिंदी विभागों में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय की रचनात्मकता का उदाहरण प्रस्तुत करेगी।